

# प्र२न बैंक

कक्षा – 10

विषय – संस्कृत

**प्रश्न1 अधोलिखित प्रश्नानाम् उचित विकल्पं चित्वा लिखत—**

1. भारतवर्षस्य उत्तरस्यां दिशि वर्तते—

( अ ) हिमाद्रिः / हिमालयः      ( ब ) विन्ध्याचलः

( स ) समुद्रः / इन्दुसरोवरः      ( द ) गंगासागरः

2. गायन्तिदेवाः किल गीतकानि—इत्ययं श्लोकः कस्माद् ग्रन्थाद् उद्घृतः—

( अ ) विष्णुपुराणात्      ( ब ) ऋग्वेदात्

( स ) रामायणात्      ( द ) वृहन्नारदीयपुराणात्

3. समान संस्कृतिमतां जनानां पितृपुण्यभूः किं निगद्यते—

( अ ) एकं राष्ट्रम्      ( ब ) एकं राज्यम्

( स ) एकोभूखण्डः      ( द ) पितृभूः पुण्यभूः च

4. राष्ट्रस्य उत्थान—पतनयोः अवलम्बः कः वर्तते—

( अ ) राष्ट्रस्य शत्रवः      ( ब ) राष्ट्रियाः

( स ) अराष्ट्रियाः      ( द ) राष्ट्रस्य मित्राणि

5. हिमाद्रिः भारतस्य तिष्ठति—

( अ ) उत्तरम्      ( ब ) दक्षिणम्

( स ) उदीचीम्      ( द ) प्रतीचीम् ।

6. भारतसमुद्रस्य स्थितम् —

( अ ) दक्षिणम्      ( ब ) उत्तरम्

( स ) उदीचीम्      ( द ) प्रतीचीम् ।

7. विद्या शस्त्रं शास्त्रं च—

( अ ) द्वौविधे      ( ब ) द्वे विधे

( स ) द्वि विधे      ( द ) त्रि विधे ।

8. भवन्ति भूयः पुरुषाभारत भूमिभागे—

( अ ) पुरुषत्वात्      ( ब ) मानवत्वात्

( स ) सुरत्वात्      ( द ) पुण्यात्

9 बालकः सिंहशिशोः किंगणयितुम् इच्छति—

( अ ) केशान् ( ब ) मानवत्वात्

( स ) दन्तान् ( द ) पादान्

10 बालकस्य किं नाम आसीत् —

( अ ) रिपुदमनः ( ब ) दुष्टदमन

( स ) अरिदमनः ( द ) सर्वदमनः

11 तापसी कस्य क्रीडनकम् आनेतुंगच्छति—

( अ ) मारीचस्य ( ब ) सर्वदमनस्य

( स ) मार्कण्डेयस्य ( द ) दुष्यन्तस्य

12. जातकर्मसमये कः बालकाय अपराजिता—नामौषधिं ददाति ?

( अ ) दुष्यन्तः ( ब ) मारीचः

( स ) शकुन्तला ( द ) मार्कण्डेयः

13. तापसी केन पदार्थेन निर्मितं मयूरम् आनयति —

( अ ) स्वर्णनिर्मितम् ( ब ) ताम्रनिर्मितम्

( स ) काष्ठनिर्मितम् ( द ) मृतिकानिर्मितम्

13. मा खल चापलं कुरु ? इतिउक्तम् —

( अ ) तापस्या ( ब ) बालेन

( स ) सिंहेन ( द ) नेपथ्ये ।

14. ' अहोबलीयः खलु भीतोऽस्मि । ' इति केनोक्तम्—

( अ ) बालकेन ( ब ) नृपेण

( स ) प्रथममातापस्या ( द ) द्वितीयया तापस्या ।

15. ' इति तापसी विलोक्य हसति । ' कः—

( अ ) नृपः ( ब ) सिंहशिशुः

( स ) बालः ( द ) तापसी ।

16. आकार सदृशं चेष्टितमेवास्य किं कथयति —

( अ ) एव : ऋषिकुमार ( ब ) नैषः ऋषिकुमारः

( स ) नैषः मुनिकुमारः ( द ) नैषः राजकुमारः

17. रक्षा करण्डके औषधिरासीत् –

- ( अ ) अपराजिता नाम                            ( ब ) पराजिता नाम  
( स ) सञ्जीवनीनाम                            ( द ) मृत्युञ्जयो नाम ।

18. 'मेवाड़' राज्यम् उद्भव भूमि: अस्ति—

- ( अ ) उत्सर्गपरम्परायाः                    ( ब ) शूराणां शौर्यस्य  
( स ) प्रतापस्य                                    ( द ) वीराणाम् ।

19. महाराणाप्रतापस्य वंशः आसीत् –

- ( अ ) पुण्यवंशः                                    ( ब ) सिसोदिया  
( स ) गुप्तवंशः                                    ( द ) मौर्यवंशः ।

20. मुगलैः सह प्रवृत्तप्रतापस्य मुख्यं 'युद्धम् आसीत् –

- ( अ ) चित्तौड़युद्धम्                            ( ब ) उदयपुरयुद्धम्  
( स ) हल्दीघाटीयुद्धम्                            ( द ) चावण्डयुद्धम् ।

21. प्रतापाय कः स्वीयंसम्पूर्ण धनंदत्तवान् –

- ( अ ) चेटकः                                        ( ब ) उदयसिंह  
( स ) हकीमखाँ सूरि                            ( द ) भामाशाहः ।

22. प्रतापस्य राज्याभिषेकः कस्मिन् ग्रामेऽभवत् ?

- ( अ ) उदयपुरे                                        ( ब ) चित्तौड़दुर्ग  
( स ) मावलीग्रामे                                    ( द ) गोगुन्दाग्रामे ।

23. महाराणा प्रतापस्य जन्म विक्रमसंवत् तस्मै वर्षऽभवत् –

- ( अ ) 1597    ( ब ) 1540  
( स ) 1697    ( द ) 1857

24. प्रतापसिंहः यदामेवाड़ राज्यसिंहासनमारुढ़वान् तदातस्य कियत् वयः आसीत् –

- ( अ ) 23 वर्षदेशीयः                            ( ब ) 32 वर्षदेशीयः  
( स ) 40 वर्षदेशीयः                                    ( द ) 50 देशवर्षीयः

25. प्रतापः कीदृशः नायकः आसीत् –

- ( अ ) धीरनायकः                                    ( ब ) धीरोदात्तः  
( स ) धीरप्रशान्तः                                    ( द ) धीरललितः

26. मेवाड़ राज्यस्य स्थितिः केन कारणे न समाचीनानासीत् –  
( अ ) युद्धाधिक्येन ( ब ) अनावृष्ट्यायाः कारणेन  
( स ) अतिवृष्टिकारेण ( द ) दुर्भिक्षणं ।

27. प्रतापस्य पिता महाराणा .. प्रतापी आसीत् –  
( अ ) विक्रमादित्य ( ब ) सङ्ग्राम सिंहः  
( स ) उदयसिंहः ( द ) अमरसिंह

28. बाल्यावस्थायां स्वामिकेशवानन्दस्य नामासीत् –  
( अ ) वीरु ( ब ) बीरमा  
( स ) वीर ( द ) वीरसा ।

29 . बाल्यकाले स्वामीकेशवानन्दः आसीत्  
( अ ) पशुचारकः ( ब ) चाय –विक्रेताः  
( स ) राजसेवकः ( द ) रजकः । प्रक्षालक

30 . मातुः निधनसमये ' बीरमा ' आसीत् –  
( अ ) शिशुः ( ब ) किशोरः  
( स ) युवा ( द ) बाल्यावस्थायां

31. संस्कृतमध्येतुं कस्य शिष्यत्वं ' बीरमा ' अड्गीकृतवान् –  
( अ ) स्वामिकुशलदासस्य ( ब ) स्वामिविरजानन्दस्य  
( स ) गुरुनानकदेवस्य ( द ) बन्दाबहादुरस्य

32. ' केशवानन्द ' इतिनामकरणंकेन , कुत्र च कृतम् –  
( अ ) सरछोटूरामेण , पञ्जाबे ( ब ) एकेनसाधुना , कुम्भमेलायाम्  
( स ) राजामहेन्द्रप्रतापेन , वृन्दावने ( द ) मातापितृभ्याम् , मगलूणा—ग्रामे

33. यदास्वामिकेशवानन्दस्य शिक्षारम्भः जातः तदा स आसीत् –  
( अ ) पञ्चवर्षीयः ( ब ) दशवर्षीयः  
( स ) द्वादशवर्षीयः ( द ) षोडशवर्षीयः

34. स्वामिकेशवानन्दः आसीत् –  
( अ ) स्वतन्त्रता—सेनानी ( ब ) शिक्षाविद्  
( स ) समाज—सुधारकः ( द ) एतत्सर्वमपि

35. स्वामिकेशवानन्दः संसदः सदस्यः अवर्तत् ।—

( अ ) एकवारं , राज्यसभायाः      ( ब ) एकवारं , लोकसभायाः

( स ) द्विवार , राज्यसभायाः .      ( द ) त्रिवारंलोकसभायाः

36. नागरी प्रचारिणी सभाकुत्र प्रारक्षा —

( अ ) सांगरियाग्रामे      ( ब ) फाजिल्कानगरे

( स ) अवोहरनगरे      ( द ) श्रीगंगानगरे ।

37 . पृथिव्यां त्रिषुरल्तेषु एतत् न गण्यते—

( अ ) जलम्      ( ब ) अन्नम्

( स ) . धनम्      ( द ) सुभाषितम्

38. ' पन्नग ' — शब्दस्य अर्थोऽस्ति—

( अ ) पत्रम्      ( ब ) नगः पर्वतः वा

( स ) गरुडः      ( द ) सर्पः

39. कस्य धनंमदाय भवति—

( अ ) खलस्य      ( ब ) सज्जनस्य

( स ) धनिकस्य      ( द ) सर्वस्व

40. अहिंसा अस्ति—

( अ ) परमो धर्मः      ( ब ) परंतपः

( स ) परमंसत्यम्      ( द ) उपर्युक्तंसर्वमपि

41. ' खलः परच्छिद्राणिपश्यति ' इत्यत्र ' छिद्रम् ' इत्यस्य अर्थोऽस्ति—

( अ ) विवरम्      ( ब ) दोषः :

( स ) गुण      ( द ) बिलम्

42. पुरतः यदिकश्चित् आततायी आयातितर्हि सः—

( अ ) बहिष्करणीयः , उत्सारणीयः      ( ब ) ससम्प्रमम् अभिनन्दनीयः

( स ) सत्वरंहन्तव्यः      ( द ) सर्वथा उपेक्षणीयः

43. प्रीतिविस्मभाजनम् कः भवति—

( अ ) मित्रम्      ( ब ) अमित्रम्

( स ) तटस्थः      ( द ) एतेसर्वेऽपि

44. दानं करणीयम् –

( अ ) भाग्येअनुकूलसति      ( ब ) भाग्येप्रतिकूलेसति

( स ) सदैव      ( द ) कदापिनैव

45. अधोलिखितेषु असत्यं कथनमस्ति –

( अ ) शुश्रूषः विद्याम् अधिगच्छति      ( ब ) साधोः विद्याविवादाय भवति

( स ) आततायि – वधेदोषः न भवति      ( द ) महापुरुषाः सङ्घशीलाः भवन्ति

46. महात्मानः कीदृशाः भवन्ति –

( अ ) साधिकाः      ( ब ) विरक्ताः

( स ) निर्धनाः      ( द ) प्राज्ञाः

47 महाराणा प्रतापः राजा आसीत् –

( अ ) मारवाड़राज्यस्य      ( ब ) मेवाड़राज्यस्य

( स ) भरतपुरराज्यस्य      ( द ) अलवरराज्यस्य

48. महाराणाप्रतापः कष्टं स्वीकरोति –

( अ ) धनसंग्रहणाय      ( ब ) राज्यसुखाय

( स ) देशस्य स्वाधीनतायै      ( द ) भोजनाय

49. किं महत्पापं वर्तते –

( अ ) आत्मधनम्      ( ब ) आत्मेच्छा

( स ) आत्महननम्      ( द ) आत्मप्रशंसा

50. किं कल्याणप्रदं उच्यते –

( अ ) वीरगत्या मरणम्      ( ब ) आत्महननम्

( स ) परनिन्दा      ( द ) आत्मप्रशंसा

51. महाराणाप्रतापः कथंस्वदेशंरक्षितुम् इच्छति –

( अ ) धनैः      ( ब ) प्राणैः

( स ) विचारैः      ( द ) उदघोषैः

52. सर्वदार ! वृक्षम् आरुह्य दृश्यतांतुंतावत् कोऽयं शब्दायते ? इतिकेनादिष्टम् –

( अ ) भामाशाहेन      ( ब ) महाराणाप्रतापेन

( स ) मन्त्रिणा      ( द ) सेनाध्यक्षेण ।

53. ' का —तुच्छसेवके शक्तिः यया असौतथादुस्साहसंकृयात् । ' इतिकेनोक्तम् —

( अ ) प्रतापेन ( ब ) भामाशाहहे

( स ) भिल्लसर्वदारेण ( द ) सेवकेन

54. ' त्वदीयाजननी धन्या ' इतिकरमैउक्तम् —

( अ ) प्रतापाय ( ब ) सर्वदाराय

( स ) भामाशाहाय ( द ) अन्यरमै ।

55 गृह्यतांमहाराज ! गृह्यताम् रक्षाविधीयताम्—

( अ ) देश— धर्मयो ( ब ) नृप—सचिवयोः

( स ) प्रजा— शासकयो ( द ) बाल— वृद्धयोः

56. भामाशाह—प्रदत्तेन धनेनसैनिकाः कतिवर्षाणि यावत् योद्धं शक्नुवन्ति—

( अ ) दशवर्षाणिपर्यन्तं ( ब ) विंशतिवर्षपर्यन्तं

( स ) द्वादशवर्षाणिपर्यन्तं ( द ) पञ्चदशवर्षाणिपर्यन्तम्

57. पाठेडिस्मन् ' शरीरविज्ञान— विचक्षणः ' इतिविशेषणं कस्य कृतेप्रयुक्तम्—

( अ ) आचार्य—चरकस्य ( ब ) आचार्य—चार्वाकस्य

( स ) आचार्य—सुश्रुतस्य ( द ) आचार्यवाग्भटस्य

58. मरुः सुवर्णोनहि येन दृष्टः ' —इत्यस्य अर्थोऽस्ति—

( अ ) मरुभूमौ येनस्वर्णम् ( काञ्चनम् ) न दृष्टम् ।

( ब ) मरुभूमौसुन्दरः वर्णः ( रङ्ग ) येन न दृष्टः

( स ) स्वर्णस्य मरुप्रदेशः येन न दृष्टः

( द ) सुवर्णः ( सुरङ्ग ) स्वर्णरूपः वा मरुदेशः येन न दृष्टः ।

59. ' सैकतवप्रसानुः ' इत्यस्य कृतप्रयुक्तविशेषणमस्ति—

( अ ) रम्यः ( ब ) सुकोमलः

( स ) हैमवर्णः ( द ) उपर्युक्तानिसर्वाणिअपि

60. मरोः सौन्दर्यम् वर्धतेविशेषतः

( अ ) वसन्त ( ब ) शीत

( स ) ग्रीष्म ( द ) वर्षा

61. मरुदेशो के प्रसन्नाः सन्ति—

- ( अ ) गाव : ( ब ) मनुजाः  
( स ) देवा: ( द ) एतेसर्वेऽपि

62. 'मानंमनीषिता' इत्यादिपद्यानुसारंकियन्तिवस्तूनिमरुप्रदेशे मुख्यानिप्रतिपादितानि—

- ( अ ) पञ्च ( ब ) सप्त  
( स ) अष्टौ ( द ) नव

63. शीतलोगन्धवहः समीरः कुत्र वहति'—

- ( अ ) मरौ ( ब ) पर्वतेषु  
( स ) उद्यानेषु ( द ) वनप्रदेशेषु ।

64. केषां मधुरो विराव मरौ श्रूयते ?

- ( अ ) मयूराणाम् ( ब ) मधुकराणामब्  
( स ) तितिराणाम् ( द ) कपोतानाम्

65. मरौ कीदृशाः कलिङ्गाः भवन्ति —

- ( अ ) तुच्छिलाः ( ब ) रक्तवर्णाः  
( स ) पक्वाः ( द ) हरितवर्णाः

66. देवा : कैः प्रसन्नासन्तिमरौ—

- ( अ ) वृतैः ( ब ) दानेन  
( स ) यज्ञेन ( द ) त्रिभिरेव

67. महाराजस्य सूरजमल्लस्य अन्यत् नाम आसीत् —

- ( अ ) सज्जनसिंह ( ब ) सुजानसिंह  
( स ) सुरजनसिंह ( द ) बदन सिंह

68. महाराजः सूरजमल्लः आसीत् —

- ( अ ) जाट-राजा ( ब ) मराठा-राजा  
( स ) सिक्ख -राजा ( द ) राजपूत-राजा

69. सूदन कवे: सूरजमल्ल विषय कं काव्यमस्ति—

- ( अ ) रामचरितम् ( ब ) सूरजमल्लचरितम्  
( स ) सुजानचरितम् ( द ) भूपालचरितम्

७० 'वंशभास्कर' इति ख्यातस्य ग्रन्थस्य रचनाकारोऽस्ति—

- |                     |                         |
|---------------------|-------------------------|
| ( अ ) भास्कराचार्यः | ( ब ) सूर्यमल्लः मिश्रण |
| ( स ) मल्लिनाथः     | ( द ) महाराजः सुरजमल्लः |

## 71. सूरजमल्लस्य कालः अस्ति-

- ( अ ) नवमी शतीई ० ( ब ) दशमी शताब्दीई ०  
 ( स ) अष्टादश— शताब्दः ई ० ( द ) विंश— शताब्दः ई ०

७२. धाद् हि युद्धात् श्रेयोऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते इति वचनमस्ति—

- ( अ ) श्रीमद्भगवत् गीतायाम्      ( ब ) रामायणे— युद्धकाण्डे  
( स ) पुराणेषु                                    ( द ) रघुवंशे

७३. तस्मिन् कालखण्डे कः शासकः गोहननं कृतवान् –

- ( अ ) अकबर: ( ब ) औरंगजेब  
 ( स ) मीर बख्खीसलावत खान ( द ) जहाँगीर

#### 74. सूरजमल्लः अर्थशास्त्रज्ञेषु के इवासीत् –



75. सैय्यद गुलामअलीनकवी कस्य इतिहासग्रन्थस्य रचना कृता-



७६. सूरजमल्लोऽन्तिमप्रतापीहिन्दुनरेशः मन्यते –



77 एतदेशप्रसूतस्य सकाशाद् ..... सर्वमानवाः। इति श्लोकंकस्माद् ग्रन्थाद् उद्धृतोऽस्ति-



७८ माताभूमिः पुत्रोऽहंपृथिव्याः । इतिकस्मिन् वेदेऽक्तम्—





११ आचार्योपदेशः पाठकस्मातउपनिषदात् उद्घृतः अस्ति—



100 हिन्दूतिहासज्ञाः कं १८ शताब्दस्य “कनिष्ठः” इति घोषितवन्तः—



प्र. 2+3

- 1 पंजीकरणप्राप्तः ..... प्रारभत् । (4:00)

2 भाषणप्रतियोगितासायं ..... आरभत् । (6:30)

3 शिवांगी ..... स्वपिति । (12:20 रात्रौ)

4 बालकः ..... मध्यावकाशेकीडति । (1:40 अपराह्ण)

5 (7:15) ..... 6 (3:50) .....

7 (2:45) ..... 8 (4:55)) .....

9 (7:30) ..... प्रातः वादने प्रार्थना ।

10 (10 :00) ..... प्रातः अर्धावकाशः ।

11 (10:30) ..... प्रातः वादने पञ्चमः कालांशः ।

10 (12 :45) ..... वादने पूर्णः अवकाशः ।

11 सायं ( 8.30 ) ..... वादने सामुदायिक – भवने आगमनम् ।

12 सायं ( 9.00 ) ..... वादने कवितापाठः ।

13 रात्रौ ( 9 .45 ) ..... वादने प्रीतिभोजनम् ।

14 रात्रौ(10 .10) ..... वादने प्रसादवितरणम् ,प्रस्थानं च ।

15 प्रातः ( 6.20 ) ..... वादने ईशवन्दना ।

16 प्रातः ( 7.40 ) ..... वादने उपाहारः ।

17 प्रातः ( 8.50 ) ..... वादने संस्कृतसम्भाषणाभ्यासः ॥

18 प्रातः ( 4.00 ) ..... वादने वर्तनी – संशोधनम् ।

19 1. 25 ----- 20 3. 55 -----

प्र. 4–6 अधोलिखितानिरेखांकित शब्दानि शुद्धं कृत्वापुनः लिखत ।

1. वृक्षेभ्य । अधः छाया ।
2. अहंरोटिका खादामि ।
3. बालकत्रयं प्रतिदिनम् उपवनंगच्छन्ति ।
4. शिष्यः गुरुंनिवेदयति ।
5. कुशः नेत्रात् अन्धः अस्ति ।
6. मोहनः भिक्षुकंवस्त्रं ददाति ।
7. हिमालयेनगंगानिर्गच्छति ।
8. पिता सह पुत्र । गच्छति ।
9. त्वं तत्र गच्छतु ।
10. अत्र त्रयः बालिकाः पठन्ति ।
11. अस्मिनेवविद्यालयेवयंपठामि ।
12. सः बालिकामम सखीअस्ति ।
13. पितापुत्रे कुरुते ।
14. भवान् कुत्र गच्छसि ।
15. गृहस्य परितः वृक्षाः सन्ति ।
16. पंचपाण्डवाः आसीत् ।
17. बालिकाः चलचित्रं पश्यति ।
18. अहंत्वया सह गमिष्यसि ।
19. मममाताआपणंगच्छसि ।
20. जटाभ्यः तापसः ।
21. सत्यंमाप्रमद ।
22. त्वंपियामि ।
23. माता ह्यः गतवान् ।
24. शिल्पारमांपत्रं लिखति ।
25. छात्रौवदन्ति ।
26. तेममित्राणिअस्ति ।

27. ममदुर्धं न रोचते ।
28. नगरस्य निकषाउपवनमस्ति ।
29. रमाकार्यस्य कुशला ।
30. सः पादस्य खंज अस्ति ।

**प्र 7–8 अधोलिखितानांवाक्यानांवाच्य परिवर्तनंकुरुत—**

1. जनः ग्रामंगच्छति ।
2. भगिन्यावस्त्रं प्रक्षाल्यते ।
3. मयानगरंगम्यते ।
4. त्वंपाठंलिखसि ।
5. रामेणपुस्तकंपठ्यते ।
6. मयासाधुः दृश्यते ।
7. अहंग्रामंगच्छामि ।
8. सीतयापुस्तकंपठ्यते ।
9. शीलयाहस्यते ।
10. छात्रः पुरस्कारं गृहणाति ।
11. छायाकारः छायाचित्रं रचयति ।
12. अहंलेखं लिखामि ।
13. वृक्षाः फलानिददति ।
14. नृपः शत्रुंहन्ति ।
15. मयानित्यव्यायामक्रियते ।
16. मयाफलानि खाद्यन्ते ।
17. एताः बालिकापठन्ति ।
18. अहंपुस्तकानिपठामि ।
19. भवान् भ्रमणाय गच्छति ।
20. अहं श्लोकौपठामि ।

**प्र०9–11 पर्यन्तं मत्रजूषायामप्रदतैअव्ययपदैः रित्कस्थानानिपूरयित्वालिखतु**

1. गृहीत.....केशेषुमृत्युना धर्ममाचरत् । (अपि / अत्रं / इव)
2. कथमहं.....गच्छामि । (कुत्र / नुनम् / तत्र)
3. जननीजन्मभूमिश्चस्वर्गाद्.....गरीयसी । (यत् / बहि / अपि)
4. विद्यालये.....वार्षिकोत्सवः अस्ति? (कदा / अत्र / तदा)
5. केचन.....जयघोषंकरिष्यन्ति । (इति / इव / बहिः)
6. सूर्यः अग्निलोकम्.....प्रतिभाति । (कदा / बहिः / तत्र)
7. .....प्रथमोऽडङ्कः । (इति / अत्र / अद्य)
8. सः गायकः.....गायति । (तथा / कुत्र / उच्चैः)
9. त्वं.....आगतवति? (तत्र / कुतः / कुत्र)
10. .....सः सत्यंवदति । (पुरा / ह्य / नुने)
11. रामोऽवदत्.....सः सर्वम् अपश्यत् । (कुत्र / नुनं / यत्)
12. यत्ने कृते यदि न सिध्यति कः.....दोषः? (यत्र / कुत्र / अत्र)
13. .....वा मममाता? (कुत्र / अत्र / बहिः)
14. .....मातुः सहयोगाय तेनगोचारणकार्यमारब्धम् । (अधुना / इदानीं / उच्चैः)
15. .....एषा केसरिणी तवांलंघयिष्यति । (यावत् / सम्प्रति / इति)
16. .....च व्यायामः अवश्यं करणीयम् । (तथैव / अपि / अधुना)
17. .....एका नटीस्वनृत्यकौशलंप्रदर्शयिति । (अत्र / बहिः / उच्चैः)
18. .....अत्र निर्जनेवनेतण्डुलकणानांसम्भवः? (अत्र / कुतः / कदा)
19. केशवानन्दस्य नाम 'बीरमा'.....आसीत् । (अत्र / इति / अधुना)
20. नाहंकृषिज्ञः पथिकः.....नाहम् । (इति / अपि / यावत्)

**प्रश्न12 सन्धिविच्छेदं कृत्वा संधे: नामापिलिखत-**

1. मनोरथ
2. मनोहर
3. नमस्ते
4. यशोदा
5. धनुष्टंकार
6. पुनारमते
7. मुनिरिति

8. रामोजयति
9. रामोऽवदत
- 10.भूमिरस्ति
- 11.कुतोऽत्र
- 12.व्याकुलश्चलति
- 13.सर्वेरकचितीयभूय
- 14.देहोऽयम
- 15.मातुराख्या
- 16.ततस्तेषु
- 17.मातुश्च
- 18.प्रतिमूर्तिरासीत
- 19.पुनरात्मगत्या
- 20.प्रतापोऽस्वरथोऽभवत

प्रश्न 13 सन्धिं कृत्वा संधे: नामापिलिखत—

1. शिवः+ च
2. रामः + च
3. नमः +नमः
4. निः +चलः
5. भानुः +राजते
6. रामः +आगच्छति
7. ताः + गच्छन्ति
8. पुनः+ अत्र
9. शिवः+ वन्द्य
- 10.हरिः +शेते
- 11.लताः +ऐधन्ते
- 12.चित्तकैः + च
- 13.औषधिः +अस्य
- 14.सः +अपि
- 15.प्रातः + एव
- 16.अतः +एव
- 17.नैकः +अपि
- 18.धन्यः +अस्ति
- 19.सुभक्तैः +ईडयाम
- 20.शम्भुः+राजते

प्रश्न 14 समस्त पदानां विग्रहं कृत्वा समाप्तस्य नामापि लिखत—

1. प्रतिदिनम्
2. उपकृष्णम्
3. यथाशक्तिम्
4. निर्धनः
5. सहरि
6. निर्मक्षिकम्
7. उपवनम्
8. प्रतिकूलम्
9. निर्जलम्
- 10.अधिगोपम्
- 11.उपाग्नि
- 12.सुमद्रम्
- 13.सुकेरलम्
- 14.सुभिक्षम्
- 15.दुर्यवनम्
- 16.निर्विघ्नम्
- 17.अतिहिमम्
- 18.अतिनिद्रम्
- 19.अनुविष्णु
- 20.प्रत्येकम्

प्रश्न 15 विग्रहपदानां समासं कृत्वा समासस्य नामापि लिखत—

1. जनानां अभाव
2. रूपस्य योग्यम्
3. हरौ इति
4. कृष्णस्य समीपम्
5. जनस्य अभाव
6. शक्ति अनतिक्रम्य
7. चक्रेण सह
8. गंगायाः समीपे
9. मगधानाम् समृद्धिः
- 10.मूढानाम् व्यृद्धिः
- 11.शकानाम् व्यृद्धिः

12. प्रत्यूहानाम् अभाव
13. शीतस्य अत्यय
14. दुःखानाम् अत्यय
15. क्रीड़ा सम्प्रति न युज्यते
16. गुरोः पश्चात्
17. अर्थम् अर्थं प्रति
18. रुचिमनतिक्रम्य
19. मतिमनतिक्रम्य
20. हरि शब्दस्य प्रकाश

प्र. 16–17 पर्यन्तं अधोलिखितेषुरेखांकितपदेषुविविभक्तिंतत् कारणच लिखत—

1. जलं विनाजीवनंनास्ति ।
2. पार्वती “नमः शिवाय”इति जपम् अकरोत् ।
3. मन्दिरम् उपर्युपरि ध्वजः विद्यते ।
4. ग्रामं परितः क्षेत्राणिसन्ति ।
5. सीता गीतया सह पठति ।
6. नगरात् पृथक् आश्रमः अस्ति ।
7. राजमार्गम् अभितः वृक्षा सन्ति ।
8. रामः लक्ष्मणेन सह वनंगच्छति ।
9. पिता पुत्राय कुध्यति ।
10. बालकाय मोदकंरोचते ।
11. छात्रः विद्यालयं प्रतिगच्छति ।
12. नृपः सिंहासनम् अध्यास्ते ।
13. दीपकः बीकानेरम्आवसति ।
14. सः मावणक पन्थान् पृच्छन्ति ।
15. मदनः अजां ग्रामं नयति ।
16. छात्रः शिक्षकेन सह समारोहेगच्छति ।
17. सूरदासः नेत्राभ्याम् अन्धः आसीत् ।
18. सः नेत्रेण काणः ।
19. श्रेष्ठी शिरसा खल्वाटः विद्यते ।

20. सः जटाभिः तापसः प्रतीयते ।
21. नृपः निर्धनाय धनं यच्छति ।
22. गणेशाय दुर्घं रोचते ।
23. भक्ताय रामायणं रोचते ।
24. दुर्जनः सज्जनाय ईर्षति ।
25. श्री गुरवे नमः ।
26. श्री गणेशाय नमः ।
27. इन्द्राय वषट् ।
28. दैत्येभ्यःहरिः अलम् ।
29. मोहनः सिंहात् विभेति ।
30. हरिः पापात् रक्षति ।
31. काश्मीरेभ्यःवितस्तानदीप्रभवति ।
32. कामात् कोधः जायते ।
33. ज्ञानात् ऋतेमुक्तिः न भवति ।
34. भवनस्य उपरि खगाः सन्ति ।
35. कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः अस्ति ।
36. गोषु कृष्णा बहुक्षीरा ।
37. पिता पुत्रे स्निहयति ।
38. तिलेषु तैलं विद्यते ।
39. हनुमते स्वस्ति ।
40. बालकः पर्यकम् अधिशेते ।

#### प्र.18 कोष्ठकेप्रदतप्रकृतिप्रत्यायाभ्यांपदंनिर्माय वाक्यंपूरयत—

1. प्रसन्नोबालकः.....(शंक्+शानच्)
2. .....गोपालगच्छति । (पठ्+शत्)
3. ग्रामं.....तृणंपश्यति । (गमृ+शत्)
4. .....धावकः मार्गेअपतत् । (धाव्+शत्)
5. मुनिः पुनरापिविशदि.....अकथयत् । (कृ+शत्)

6. तनयः तत्र.....अध्ययने संलग्नः समभूत । (वस्+शतु)
7. जनकं.....पुत्रः प्रसन्नः अस्ति । (सेव्+शानच्)
8. .....देशरक्षा कर्तव्यात् विमुखा आसन् । (मन्य+शानच्)
9. पुरस्कारं.....छात्रः प्रसन्नः भवति । (लभ+शानच्)
10. प्रदूषणनिरन्तरं.....अस्ति । (वृध्+शानच्)
11. कालः तु सततं चक्रवत्.....वर्तते । (परिवृत्+शानच्)
12. शिक्ष+शानच्
13. धा+शानच्
14. पच्+शानच्
15. शी+शानच्
16. नृत्+शतृ
17. पा+शतृ
18. पच्+शतृ
19. नी+शतृ
20. प्रच्छ+शतृ

**प्र. 19 अधोलिखितयोः वाक्ययोः रेखांकितपदेषु प्रकृतिप्रत्ययच पृथक् कृत्वालिखत—**

1. मानवः सामाजिक प्राणी अस्ति ।
2. बालकोऽयं गुणवान् अस्ति ।
3. श्रीधरः धनी आसीत् ।
4. सः बुद्धिमानः अस्ति ।
5. ज्ञानवान् सर्वत्र पूज्यते ।
6. श्रेष्ठी! स्वागतं ते ।
7. गुणवान् सर्वत्र पूज्यते ।
8. विचारवान् सः सफलतां अलभत् ।
9. रावणः स्वजीवने सुखी आसीत् ।
10. अद्यः अस्माकं वार्षिक समारोहः अस्ति ।
11. श्रीमान्

12. धनवान्

13. कुमुदी

14. पताकी

15. वीणी

16. माली

17. लौकिक

18. आध्यात्मिक

19. दैहिक

20. स्नेहवान्

प्रश्न सं 20 अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखतु।

1 भारते जन्म लब्ध्वा अपि यो जनः सत्कर्म – पराङ्मुखः भवति , स किं त्यक्त्वा किं प्राप्तुमिच्छति ?

2 विद्यायाः प्रकारद्वयं किमस्ति ?

3 पृथिव्यां सर्वमानवाः स्वं स्वं चरित्रं कस्य सकाशात् शिक्षेन् ?

4 स्वर्गादपि का गरीयसी ?

5 कया विना स्वनिकटस्थमपि राष्ट्रं जनाः न पश्यन्ति ?

6 राष्ट्रे कस्य स्वत्वं न भवितुं शक्नोति ?

7 शास्त्रचर्चा कदा प्रवर्तते ?

8 बालकः कस्य वंशस्य आसीत् ?

9 सर्वदमनस्य मणिबन्धे किम् आबद्धम् आसीत् ?

10 बालकस्य पितुः किं नाम आसीत् ?

11 बालकः सर्वदमनः कस्य सकाशं गन्तुम् इच्छति ?

12 मवाङ्गराज्यस्य वीराणां नामानि लिखत ?

13 प्रतापस्य जन्म कदा अभवत् ?

14 प्रतापस्य शासनकाले कः मुग्लशासकः आसीत् ?

15 प्रतापः कुत्र स्वराजधानीम् अकरोत् ?

16 स्वामिकेशवानन्दस्य जन्म कदा अभवत् ?

17 स्वामिकेशवानन्दस्य मातापित्रोः नाम किम् ?

- 18 स्वामिनः संस्कृताध्ययनं कुत्र अभवत् ?
- 19 केशवानन्देन संस्कृत – पाठशाला कुत्र स्थापिता ?
- 20 स्वामिनः शिक्षा – प्रसारादिकार्याणि द्रष्टुं ये महापुरुषाः आगताः तेषु केषामपि पञ्चानां नामानि वदन्तु ।
- 21 ' सुभाषितम् ' इति पदस्य कोऽर्थः ?
- 22 पृथिव्यां कियन्ति रत्नानि ? कानि च तानि ?
- 23 मूढैः कुत्र रत्नसंज्ञा विधीयते ?
- 24 पात्रापात्रविवेकः केन तुल्यं भवति ?
- 25 अजरामरवत् किं चिन्तयेत् प्राज्ञः ?
- 26 कुत्र लज्जा त्यक्तव्या सुखार्थिना ?
- 27 महाराणा प्रतापः कुत्र उपविष्टः आसीत् ?
- 28 भामाशाहः कः आसीत् ?
- 29 भामाशाहः किं आदाय प्रतापस्य समीपम् आगच्छति ?
- 30 प्रतापः कस्य अभावे किमपि कर्तुम् असमर्थः ?
- 31 चरकाचार्येण मरुभूमैः का विशेषता प्रकटिता ?
- 32 मरुदेशे सैकतवप्राः ( बालुका – स्तूपाः ) कीदृशाः सन्ति ?
- 33 वर्षागमे मरोः शोभा कीदृशी भवति ?
- 34 मरुमरीचिकां स्पष्टीकुर्वन्तु ।
- 35 महाराज – सूरजमल्लस्य पितुर्नाम किमासीत् ?
- 36' जाट – प्लेटो ' कः कथ्यते ?
- 37 सूरजमल्लस्य औपचारिक – शिक्षा – विषये भवन्तः किं जानन्ति ?
- 38 सुजान – चरित – काव्ये सूरजमल्लस्य कति युद्धानां वर्णनम् उपलभ्यते ?
- 39 सूरजमल्लस्य जन्म कदा अभवत् ?
- 40 सूरजमल्लस्य मृत्युः कदा कथं च अभवत् ?
- 41 श्रद्धया किं करणीयम् ?
- 42 कीदृशानि कर्माणि सेवितव्यानि ?
- 43 धर्मात् किं न करणीयम् ?
- 44 कानि त्वया उपास्यानि ?
- 45 सर्वे प्राणिनः करने तुष्यन्ति?

- 46 काव्येषु किं रम्यं?
- 47 वयं किं नमस्यामः?
- 48 भारतस्य दक्षिणदिशि कः स्थितः?
- 49 जृम्भसव सिंह! दन्तांस्ते गणयिष्ये पाठः कुतः संकलितः?
- 50 अभिज्ञानशाकुन्तलस्य रचयिता कः?
- 51 राजा दुष्यंतः कस्य आश्रमं प्रविशति?
- 52 सर्वदमनाय अपराजिता नामौषधिः केन दत्ता?
- 53 प्रतापस्य प्रतिज्ञा का?
- 54 प्रतापस्य राज्याभिषेकः कस्मिन् ग्रामे अभवत्?
- 55 प्रतापः कस्मिन् आरुह्य बहुशौर्यम् प्रदर्शितवान्?
- 56 प्रताप कथं दिवंगतः?
- 57 प्रतापस्य सेना केषु युद्धेषु कुशला आसीत्?
- 58 मरुप्रदेशे व्यापतानां केचन चतसृणाम् कुप्रथानां नामानि लिखत ।
- 59 केशवानदस्य पितरौ नाम किमासीत्?
- 60 साहित्य प्रकाशनाय “दीपक प्रेस” इत्यस्य स्थापना केन कृता?
- 61 “स्वामिकेशवानंद” इति नाम बीरमा कुतः प्राप्तः?
- 62 अज्ञाते पथि अहिण्डमानः बीरमा कुत्र प्राप्तः?
- 63 “उदासी सम्प्रदाय” इति केन प्रवर्तितेन आसीत्?
- 64 स्वामिकेशवानंदः कति वारं कदा च राज्यसभायाः सदस्य अवर्तत?
- 65 सर्वं प्राणी केन तुष्पन्ति?
- 66 साधोः शक्तिः किमर्थं भवति?
- 67 प्रासादशिखरः अपि कः न गरुडायते?
- 68 “स्वदेश कथं रक्षेयम्” इति पाठस्य रचनाकारः कः?
- 69 कयोः द्व्योर्मेलनं धन्यमस्ति?
- 70 किं महत्पापं वर्तते?
- 71 महाराणाप्रतापः स्वचरेण सह कुत्र उपविष्टः आसीत्?
- 72 “मरु सौन्दर्यम् “इति पाठानुसारेण “शुष्कोपि नित्यं सरसः सः देशः “ इति केन प्रसंशितः?
- 73 क्रमेलकानां गतयः कुत्र दर्शनीयाः?

- 74 मरौ भवता कः विधेयः?
75. महाराजसूर्यमल्लः कस्य ज्येष्ठपुत्रः आसीत्?
- 76 सुजानसिंहकस्यंअपरन्नामासीत्?
77. वंशभास्करः इतिग्रन्थ कः कस्मिन् भाषायाजचरचितवान्?
78. सूरजमल्लेनकति युद्धेषुविजयश्रीचुम्बिता?
79. 18 शताब्दस्य “कनिष्ठः” “अन्तिमप्रतापीहिन्दु—नरेशः” इति कः कथ्यते?
80. मीरबख्शीसलावतखानः सूरजमल्लेन सः किंसंधिं अकरोत्?

## प्रश्न 21गद्यांश / नाट्यांश

- 1 वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति । सत्यंवद् ! धर्मचर । स्वाध्यायान्माप्रमदः ।  
सत्यान्नप्रमदितव्यम् । धर्मान्नप्रमदितव्यम् । कुशलान्नप्रमदितव्यम् । भूत्यै न प्रमदितव्यम् । स्वाध्याय—प्रवचनाभ्यां  
न प्रमदितव्यम् । देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम् । मातृदेवोभव ! पितृदेवोभव ! आचार्यदेवोभव !  
अतिथिदेवोभव!
- 2 जाट—जातौसूरजमल्लः तदेवस्थानं धर्ते यत्खलुस्थानंविदेशीयेषुप्लेटो—नेपोलियन—लूथरइत्यादीनामस्ति  
। कश्चिदेक : लेखकस्तु तं ‘ जाट—प्लेटो ’ इतिविरुद्देनभूषितवानेव । हिन्दु—इतिहासज्ञाः तं १८ शताब्दस्य ‘  
कनिष्ठः’ इतिमुस्लिमाश्च तं ‘ अन्तिमः प्रतापीहिन्दु—नरेशः ’ इति घोषितवन्तः
- 3 , इळा न देणी आपणी ‘ इतिमातृशिक्षांपालयन् , ‘ धाद हि युद्धात् श्रेयोऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते ‘  
इतिगीतोपदेशं च परिपालयन् राष्ट्रधर्म— रक्षणाय प्राणान् पणीकृत्य अपि युध्यमानः २५ डेसेम्बर १९६३ ई .  
इतिदिवसेरणेचाभिमुखे हतः । प्रतापइव , शिवाजीइव , बन्दाबैरागीइव , गुरुगोविन्दसिंहइव च महाराजस्य  
सूरजमल्लस्य परमः प्रभाव : अद्यापि इतिहासे गुञ्जति इव ।
- 4 महाराजस्य सूरजमल्लस्य जन्मवसन्तपञ्चम्याम् ( १३ फेब्रुवरी—दिने ) १७०७ तमे ईस्वीयर्वर्षस.  
हिमहाराजस्य बदनसिंहस्य ज्येष्ठपुत्रः तस्योत्तराधिकारीचासीत् सूरजमल्लस्य अपरम् एकं नाम सुजानसिंहः  
इत्यासीत् । अष्टादश— शताब्दस्य भारतस्य नायकेषुअन्यतमः आसीत् सूरजमल्लः । तस्य जनि: तदाभूत  
यदाभारतदेशस्य राजनीतिः अत्यन्तं दोलायमानाआसीत् , भारतं च विधंसक— शक्तीनां बाहुपाशेऽभवत् ।  
। सर्वथानिबद्धम् आसीत् )

5 सूरजमल्लः स्वकालखण्डस्य अत्यन्तं दुर्धर्षः , अतिशयेनतेजस्वी , नितान्तंनीतिनिपुणः , अद्वितीयश्च योद्वा आसीत् । तेनप्रायशः सप्तसुमहत्युद्घेषुविजयश्रीः चुम्बिता । कवि : सूदनः स्वकीये ' सुजानचरितम् ' इतिकाव्येतेषांसप्त— युद्धानांरोमाभृतकंसजीवंच वर्णनम् अकरोत् । रणाङ्गणे पाणियुगलेन खड्गंचालयन्तं तं वीक्ष्य तस्यारयोऽपिविस्मिताः जायन्ते स्म । युद्धरतस्य मल्लस्य अस्य शौर्ये—वर्णनंकुर्वन् प्रसिद्धः कविवरः सूर्यमल्ल—मिश्रणः ' वंशभास्कर ' —ग्रन्थेडिंगल—भाषायांलिखति

6 इदानीं मातुः सहयोगाय बीरमा — बालकेन गोचारण कार्यमारब्धम् । तदानीन्तनः दीन — हीनः ग्रामीणः कृषकवर्गः श्रमिकवर्गश्च सामन्तानां , राज्ञां ( नवाब — संज्ञकानां वा ) , वैदेशिकानां च शासकानां त्रिविधे दासता — पञ्जरे आबद्धः आसीत् । रौरव — नरकप्रायं हि तेषां जीवनमासीत् । अयं पुनः ' गण्डस्योपरि पिटकः ' संवृत्तः यत् भयङ्करो दुर्भिक्षकालः समापन्नः ' छप्पनियाँ अकाळ ' इति कुख्याते वि.सं. ९ ६ ५६ तमस्य तस्मिन् दारुणे दुर्भिक्षे प्राणधारणमपि दुर्भरमासीत् ।

7 स्वातन्त्र्यान्दोलनेऽपि सक्रियः स्वामिकेशवानन्दः नैकवारं वर्षाणि यावत् कारागारेष्वपि निबद्धः । चरन् वै अनन्त सा प्रागेव ( प्रा गोधूमादिपे वराकी में , परेशान ( बढ़ जा तत्कालीन विन शिक्षा प्रसाराय कृ तभूरिश्रमेण स्वामिना ' ग्रामोत्थान — विद्यापीठ , संगरिया ' इत्यस्य संस्थापनं कृतम् । ग्राम्यक्षेत्रेषु तेन उपत्रिशतं ( ३०० ) शिक्षाशालाः , उपपञ्चाशत्त्वं ( ५० ) छात्रावासाः स्थापिताः । शिक्षाक्षेत्रे स्वामिनः श्रमः पं . मदनमोहनमालवीयस्य पुरुषार्थं स्मारयति । योग्यमेव स्वामिवर्यः ' शिक्षा — सन्तः ' इति विरुद्देन भूषितः ।

8 स्वशिष्यस्य गुण — गण — महिम्ना परमप्रीतः गुरुः कुशलदासः स्वजीवितकाले एव आश्रमस्य स्वामित्वं केशवानन्दाय दत्तवान् गुरुपीठे च तं प्रतिष्ठापितवान् । ' परोपकाराय सतां विभूतयः ' इति धिया समृद्धमठस्य विभूतीनामुपयोगं विद्याय उर्दू — प्रधाने फाजिल्का — अबोहर — क्षेत्रे राष्ट्रभाषायाः प्रचारकार्यमारब्धम् । आदौ । चरन् । तावद् आश्रमे एव ' वेदान्तं पुष्पवटिका ' इत्याख्य — सार्वजनिक — हिन्दी — पुस्तकालयस्य वाचनालयस्य च प्रारम्भः कृतः । पश्चात्तत्रैव एका संस्कृत — पाठशालाऽपि स्थापिता । अबोहर — नगरे ' नागरी — प्रचारिणीसभा प्रारब्धा

9 उत्सर्गपरम्परायाः उद्भवभूमि , प्रतापस्य पुण्यभूमिं ' मेवाड़ ' राज्यं को न जानाति ? इदं राज्यं शूराणां शौर्येण , यूनाम् आत्माहृत्या , सतीनाभृत्य ' जौहर ' परम्पराया विश्वस्मिन् जगति महती प्रसिद्धम् अलभत । मेवाड़राज्यस्य सिसोदियावंशे बप्पारावल — राणाहमीर — राणासांगा प्रभृति — वीराणां सुदीर्घा परम्परा विद्यते । अस्यामेव परम्परायां महाराणाप्रतापसिंहस्य जन्म विक्रमस्य १५ ६ ७ तुमे वर्षे ( १५४० ईस्वीयाब्दे ) ज्येष्ठ शुक्लतृतीयायाम् अभवत् । प्रतापः बाल्यकालादेव वीरयोद्वा , कुशलसेनानी , धीरनायकश्च आसीत् ।

10 शत्रुभिः सह दीर्घकालीनानां युद्धानां कारणेन मेवाड़राज्य — स्थितिः समीचीना न आसीत् । यद्यपि प्रतापस्य पिता महाराणा उदयसिंहः प्रतापी राजा आसीत् , किन्तु परिस्थितिवशात् चित्तौड़ादिस्थानानि

आक्रान्तुभिरधिगृहीतानि । अतएव सिंहासनमधिरूढः प्रतापः हस्तच्युतान् प्रमुखदुर्गान् प्राप्तुं चिन्तनमारेभे । प्रथमं सः स्वस्वामिभक्तसामन्तानां स्थानीयभिल्लजनानां च सभाम् आकारितवान् । तत्रैव सः प्रतिज्ञां कृतवान्

“ यावत् अहं हस्तच्युतान् स्वराज्यभागान् पुनः न प्राप्त्यामि , तावत् सुवर्णपात्रेषु भोजनं न करिष्यामि , राजप्रासादे वासं न करिष्यामि , मृदुतल्पे च शयनं न करिष्यामि ।”

## प्रश्न 22 गद्यांश/नाट्यांश

1 ( नेपथ्ये )

मा खलु चापलं कुरु । कथं गत एवात्मनः प्रकृतिम् ?

राजा —( कर्ण दत्त्वा ) अभूमि: इयम् अविनयस्य । को नु खल्वेषः निषिध्यते ? ( शब्दानुसारेण अवलोक्य ) ( सविस्मयम् ) अये , को नु खलु अयम् अनुबध्यमानः तपस्विनीभ्याम् अबालसत्त्वो बालः ?

अर्धपीतस्तनं मातुरामर्दकिलष्टकेसरम् ।

प्रक्रीडितुं सिंहशिशुं बलात्कारेण कर्षति ॥

( ततः प्रविशति यथानिर्दिष्टकर्मा तपस्विनीभ्यां सह)

बालः जृम्भस्व सिंह ! दन्तांस्ते गणयिष्ये ।

2 तापसी —भवतु , न मामयं गणयति । ( पार्श्वमवलोक्य ) कोऽत्र ऋषिकुमाराणाम् ? ( राजानमवलोक्य ) भद्रमुख , एहि तावत् ! मोचयानेन डिभ्मलीलया बाध्यमानं बालमृगेन्द्रम् !

राजा — उपगम्य । ( सस्मितम् ) अयि भो महर्षिपुत्र !

तापसी —भद्रमुख ! न खल्वयमृषिकुमारः ।

राजा —आकारसदृशं चेष्टितमेवास्य कथयति । स्थान — प्रत्ययात्तु वयमेवंतर्किणः । ( इति यथाभ्यर्थितमनुतिष्ठति

3 राजा — आत्मगतम् ) कथमेकान्वयो मम ? ( प्रकाशम् ) न पुनरात्मगत्या मानुषाणामेष विषयः ।

तापसी— यथा भद्रमुखो भणति । अप्सरःसंबन्धेनास्य जनन्यत्र देवगुरोस्तपोवने प्रसूता ।

राजा —( अपवार्य ) हन्त , द्वितीयमिदमाशाजननम् । ( प्रकाशम् ) अथ सा तत्रभवती किमाख्यस्य राजर्षे : पत्नी ?

तापसी— राजा कस्तस्य धर्मदारपरित्यागिनो नाम संकीर्तयितुं चिन्तयिष्यति ?

राजा —( स्वगतम् ) इयं खलु कथा मामेव लक्ष्यीकरोति । यदि तावदस्य शिशोर्मातरं नामतः पृच्छामि ? अथवा अनार्यः परदारव्यवहारः

4 बाल— सदृष्टिक्षेपम् ) कुत्र वा मम माता ?

उभे— नाम सादृश्येन वज्रिचतो मातृवत्सलः ।

द्वितीया— वत्स , अस्य मृत्तिकामयूरस्य रम्यत्वं पश्येति भणितोऽसि ।

राजा —( आत्मगतम् ) किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या । सन्ति पुनर्नामधेयसादृश्यानि ।

बाल :—मातः ! रोचते मे एष भद्रमयूरः । ( इति क्रीडनकमादत्ते )

प्रथमा—( विलोक्य , सोद्वेगम् ) अहो , रक्षाकरण्डकमस्य मणिबन्धे न दृश्यते ।

राजा —अलमावेगेन । नन्दिदमस्य सिंहशावकविमर्दात् परिभ्रष्टम् । ( इत्यादातुमिच्छति )

5 राजा —किमर्थं प्रतिषिद्धाः स्मः ?

प्रथमा —शृणोतु महाराजः ! एषाऽपराजिता नामौषधिरस्य जातकर्मसमये भगवता मारीचेन दत्ता एतां किल मातापितरावात्मानं च वर्जयित्वाऽपरो भूमिपतितां न गृहणाति ।

राजा —अथ गृहणाति ?

प्रथमा— ततस्तं सर्पो भूत्वा दशति ।

राजा —भवतीभ्यां कदाचिदस्याः प्रत्यक्षीकृता विक्रिया ?

उभे— अनेकशः ।

राजा —( सहर्षम् आत्मगतम् ) कथमिव सम्पूर्णमपि मे मनोरथं नाभिनन्दामि ? ( इति बालं परिष्वजते । )

बाल :— मुञ्च माम् । यावन्मातुः सकाशं गमिष्यामि ।

6 भामाशाह :— ( प्रसन्नमुखः प्रणम्य ) महाराज ! इयती एव स्वल्पतमा यद् अनया द्वादशवर्षाणि यावत् पञ्चविंशतिसहस्रसैनिकाः सहर्षं योद्धं शक्नुवन्ति ।

प्रताप—अहो ! तदातुकिंकथनीयम् ? महत्कार्यसेत्यतिअनया ।

( सर्वान् सम्बोध्य ) अद्य अस्मात् एव क्षणात् राणास्वदेशस्य पारतन्त्र्य—शृंखला : त्रोटयितुं शत्रून् संहारयितुं धर्मरक्षितुं च योत्स्यते , योत्स्यतेअवश्यं योत्स्यते ! ( भामाशाहम् अभिलक्ष्य ) धन्योऽसिमित्र ! धन्यः । एहि त्वां गाढम् आलिङ्गतुम् अभिलषामि ।

भामाशाहः— ( प्रतापसंसंकोचम् उपसृत्य ) अनुगृहीतः अस्मिस्वामिन् ! अनुगृहीतः ।

( ततः उभौअपिप्रेम्णापरस्परम् आलिङ्गतः , द्वयोः मेलनंविलोक्य सर्वेसहचराः सहर्षम् )

धन्योऽस्तिराणा , पुनरस्तिमन्त्री , धन्यं द्वयोर्मेलनमस्ति धन्यम् ।

धन्यावयं स्मः समयश्च धन्यः , धन्यंपुनदर्शनमस्तिपुण्यम् ॥

स्वदेश : विजयताम् ! महाराणाविजयताम् !! भामाशाहः विजयताम् !!!

7 प्रथमः भिल्लः—हाभगवन् ! अद्य कीदृशः समयः आगतः ? प्रतापः अपिस्वदेशांपरित्यज्य अन्यत्र प्रस्थितः अस्ति ।

द्वितीयः भिल्लः— न जानेअस्य मेवाड़देशस्य भाग्येकिंलिखितम् अस्ति । हेदीनदयालो ! परमेश्वर !! त्वम् अपि अद्य इयान् निष्ठुरः कथंजातः !

तृतीयः भिल्लः—हा धिक् ! वराकस्य समीपे न जीवनसामग्रीन च युद्धसामग्री एव विद्यते । मातृभूमे: दुर्दशां स्वचक्षुषाकथं द्रक्ष्यामः? (रोदिति)

प्रतापः—हा धिक् ! भवन्तः सर्वइदंकिंकुर्वन्ति ? आत्महननंमहत्पापवर्तते । स्थीयतांस्थीयताम् । कष्टानिसोढवा वीरगत्यामरणंकल्याणकरंकथ्यते । इत्थम् आत्महननंतुनपुंसकानांकर्म । किञ्चिचद् धैर्येणविचारयन्तु ।

8 ( पृष्ठतः ध्वनिः भवति—स्थीयतांस्थीयतांप्रभो ! स्थीयतांस्थीयताम् !! ) —

प्रतापः—( परिचित— ध्वनिमिवआकर्ण्य सोत्साहम् ) अरेसर्वदार ! वृक्षम् आरुह्य दृश्यतांतुतावद कः अयं शब्दायते ?

सर्वदारः— ( तथानिपुणंनिरीक्षमाणः ) महाराज ! मेवाड़मन्त्री भामाशाहः इवकश्चनआगच्छन् प्रतीयते । —हुँ , किम् उक्तम् ! भामाशाहः ? तस्य कथम् इदंज्ञातम् अभूत् ? अस्तुतावत् , प्रतीक्षामहे तम् ।

( भामाशाहः धनराशिग्रन्थिम् आदाय आयाति )

भामाशाहः ( प्रणम्य ) अन्नदातः ! सेवकंसन्त्यज्य क्व प्रस्थीयतेश्रीमता ?

9 प्रतापः—भवान् सत्यंवदति ।

भामाशाहः—यदि एवं , गृह्यतांभवदीयासम्पत्तिः श्रीमता एव । त्रोट्यतांपारतन्त्य— शृंखला एभिःलोहमय—बाहुभिः ! स्वतन्त्रः क्रियतांस्वदेशः !! सुरक्षयतां धर्मः !!!

( धनस्य ग्रन्थिकांचरणयोः अर्पयतिसप्रणामम् )

प्रतापः ( साश्चर्यम् ) किम् इदंभवान् करोति ? भवदीयासम्पत्तिः कथंमदीया ? किम् एते . अपमानः ? न अहंदत्तांसम्पत्तिंपुनराददामि ।

भामाशाहः – ( सविनयम् ) महाराज ! न अहम् अपमानंकरोमि । का तुच्छ—सेवके शक्तिः यया अमी त् ) तथादुःसाहसंकुर्यात् । गृह्यतामहाराज ! गृह्यताम् ! देश— धर्मयोः रक्षा विधीयताम् !

- 10 प्रतापः—अरे धिक् माम् । यदिअहंमातृभूमिरक्षितुं न शक्नोमि , किम् अत्र वासेन मे प्रयोजनम्  
( दीर्घ निःश्वसिति )  
( ततः प्रविशतिकश्चनराजपुत्र —सर्वदारः )  
सर्वदारः – ( राजोचितंप्रणन्य ) विजयतांविजयतामहाराजः ।  
प्रतापः— ( दीर्घ निःश्वस्य मुखम् उन्नमय्य च ) हा धिक् । विजयधनिं कृत्वा त्वम् अपिकिम् एवं मां  
लज्जयसेभ्रातः !  
सर्वदारः—प्राणाधार ! किम् इदंभवान् वदति ? स्वर्धर्मा भवतासर्वकिम् अपि कृतम् ।  
स्वाधीनतार्यसर्वकिम् अपिसोढम् । भवतः सदाविजयः एव भविष्यति ।

### प्रश्न 23

- 1 मरुः सुवर्णो न हि येन दृष्टः किंतेन दृष्टंकुहचित् सुदृश्यम् ।  
स्फुटंमरौभान्ति सुमेरुशृङ्गाः शिलासु कृष्णासुनतेहिमृग्याः ॥
- 2 तेतुच्चिलाः स्वादुरसाः कलिङ्गाः सा शारदी चञ्चलचन्द्रिका च ।  
स्फूर्तिः स्फुरन्तीस्फुरगावलीषुक्रमेलकानांगतयश्च तास्ताः ॥
- 3 गावः प्रसन्नाः मनुजाः प्रसन्नाः देवाः प्रसन्नाः ब्रतदानयज्ञैः ।  
किं नाम तद्यन्नमरौ समृद्धं विद्या— समृद्धोभवताविधेयः ॥
- 4 पृथिव्यां त्रीणिरत्नानिजलमन्नंसुभाषितम् ।  
मूढैः पाषाण— खण्डेषुरलसंज्ञाविधीयते ॥
- 5 गुणैः गौरवमायातिनोच्च्वैः आसनमास्थितः ।

- प्रासादशिखरस्थोऽपिकाको न गरुडायते ॥
- 6 धन—धान्य —प्रयोगेषुविद्यायाः संग्रहेषु च ।  
आहारेव्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखीभवेत् ॥
- 7 विद्याविवादाय धनंमदाय शक्तिः परेषांपरिपीडनाय ।  
खलस्य साधोविपरीतमेतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥
- 8 अहिंसापरमो धर्मस्तथाऽहिंसापरंतपः ।  
अहिंसापरमसत्यं यतो धर्मः प्रवर्तते ॥
- 9 हिमालयं समारभ्य यावत् इन्दु सरोवरम् ।  
तं देवनिर्मितं देशं हिंदुस्थानं प्रचक्षते ॥
- 10 शस्त्रं च शास्त्रं च द्वे विद्ये प्रतिपत्तये ।  
शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रं शास्त्रचर्चा प्रवर्तते ॥

#### प्रश्न 24–25

1 इदं हि विज्ञानप्रधानं युगम् । विशिष्टं ज्ञानं विज्ञानम् ' इति कथ्यते । अस्यां शताब्द्यां सर्वत्र विज्ञानस्यैव प्रभावा दरादृश्यत । अधुना नहि तादृशं किमपि कार्यं यत्र विज्ञानस्य साहाय्यं नापेक्ष्यते । आवागमन , समाचारप्रष्ण , दूरदर्शने , सम्भाषणे . शिक्षणे , चिकित्साक्षेत्रे , मनोरंजनकार्ये , अन्नोत्पादने , वस्त्रनिर्माणे , कृषिकर्मणि 5 तथैवान्यकायकलापेषु विज्ञानस्य प्रभावस्तदपेक्षा च सर्वत्रैवानुभूयते । सम्राति मानवः प्रकृतिं वशीकृत्य तां स्वेच्छया कार्येषु नियुड्क्ते । तथाहि वैज्ञानिकैरनेके आविष्काराः विहिताः । मानवजाते: हिताहितम् अपश्यदिभः वैज्ञानिकैः राजनीतिविज्ञौर्वा परमाणुशक्तेः अस्त्रनिर्माण एव विशेषतः उपयोगो विहितः । तदुत्पादितं च लोकध्वंसकार्यम् अतिधोरं निघृणं च । अयं च न विज्ञानस्य दोषः न वा परमाणुशक्तकरपराधः , पुरुषापराधः खलु एषः । अतोऽस्य मानवकल्याणार्थमेव प्रयोगः करणीय ।

प्रश्नाः १. अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत ।

२. इदं युगं कीदृशम् ?

३. विज्ञानम् किम् अस्ति ?

४. कैः आविष्काराः विहिताः ?

५ परमाणुशक्तने : कस्मिन् उपयोगो विहितः ?

2 तुलसी केन वा न जायेत ? भारते प्रतिगृह सा भवेत् एव । प्रतिदिन से पूज्यते या । केषुचित् विशिष्टेषु प्रसङ्गेषु तस्या : विशेषपूजा अपि । बहूनां रोगाणाम् इव परिसरमालिन्यस्य निवारणेऽपि सा उपकरोति इति वदन्ति वैज्ञानिकाः । तस्या: एतत् वैशिष्ट्यम् एव एषु दिनेषु ताजभवनस्य संरक्षकाणाम् अवधानम् अपि आकृष्टवत् अस्ति । परिसरमालिन्यकारणतः ताजभवनस्य सौन्दर्यं यत् विनश्यत् अस्ति तस्य निवारणाय तद्भवनसंरक्षकैः चिन्तितं यत् तुलस्या : साहाय्य स्वीकरणीयम् इति । अतः इदानीं ताजभवनपरिसरे सहस्रशः तुलसीसस्यानि आरोप्यमाणानि सन्ति । तुलसी आधिक्येन आम्लजनकम् उत्पादय हानिकराणाम् अनिलानां प्रभाव न्यूनीकरोति इति तु प्रमाणसिद्धं सत्यम् ।

1 भारते प्रतिगृह का भवेत् ?

2 तुलसी आधिक्येन किम् उत्पादयति ?

3 केन कारणेन ताजभवनस्य सौन्दर्यं विनश्यत् अस्ति ?

4 तुलसी किमर्थम् उपकरोति इति वदन्ति वैज्ञानिकाः ?

5 कस्य विशेषपूजा भवति ?

3 भारतस्य सर्वेषु अपि राज्येषु स्त्रीणां विषये क्रियमाणाः अत्याचाराः अनुदिनम् अनुक्षणम् एधमानाः दृश्यन्ते । कामान्धीकृतचेतसाम् भोगतृष्णाशमनाय वयोभेदं विना आबालवृद्धं नारीजनाः बलिपशवः इव भवन्ति । वेदकालात् आरभ्य भारतीय समाजे स्त्रीणाम् समुज्वलम् उन्नतं च स्थानम् आसीत् । ऋग्वेदादिषु सर्वेषु वेदेषु स्त्रीणां श्रेष्ठता बहुधा कीर्तिता दृश्यते । वेदेषु कुत्रापि स्त्री निन्दा न वर्तते । वेदेतु ऋषिका , बहमवादिनी , आचार्या उपाध्याया , यजमानपत्नी , योगिनी , यजमाना , गृहिणी इत्येवं विभिन्नैः पदैः स्त्री समुल्लिखिता दृश्यते । स्त्रीपुरुषयोः समानं स्थानमेव ऋषिभिः परिकल्पितम् । अर्धनारीश्वर संकल्पनम् एव तस्य प्रत्यक्षं प्रमाणम् ॥

1 समान स्थान षिभिः परिकल्पितम् ?

2 केषु स्त्रीनिन्दा न वर्तते ?

3 कस्य राज्येषु स्त्रीणाम् अत्याचारः अनुदिनम् एधमानाः

4 कुत्र स्त्रीणाम् उन्नतस्थानम् आसीत् ?

5 किमर्थं नारीजनाः बलिपशव इव भवन्ति ?

4 एकदा कश्चन वृद्धः कृषकः मन्दिरम् आगतवान् । ग्रामीणस्य तस्य वस्त्राणि जीर्णानि विच्छिन्नानि च आसन् । सः अतीव निर्धनः आसीत् । तस्य पाश्वे स्वल्पं पिष्टम् एकः कम्बलः च आसीत् । मन्दिरस्य पुरतः धनिकाः निर्धनेभ्यः वस्त्राणि , मिष्ठान्नानि , अन्यवस्तूनि च वितरन्ति स्म । तदा एव कश्चन कुष्ठरोगपीडितः

मन्दिरात् अनतिदूरे पीडया आर्तनादं करोति स्म | सः चलितुम् अपि न शक्नोति स्म | तस्य सम्पूर्ण शरीरे व्रणः आसन् | सः बुभुक्षितः आसीत् | परन्तु जनाः तस्य उपरि दृष्टिपातं अपि न कुर्वन्ति स्म | मन्दिरं गच्छन् सः वृद्धकृषकः तं दृष्ट्वा दयार्द्रः भूत्वा तस्य समीपं गतवान् | सर्वप्रथमं तस्य व्रणान् स्वच्छीकृतवान् | ततः तस्मै भोजनार्थं पिष्टं दत्त्वा स्वकीयेन कम्बलेन तस्य शरीरम् आच्छादितवान् | तदनन्तरम् सः मन्दिरं गतवान् | सत्यमुक्तम् – परोपकारार्थमिदंशरीरम्

1. कुष्ठरोगपीडितस्य शरीरे के आसन् ?
2. कः दयार्द्रः अभवत् ?
3. वृद्धकृषकस्य पाश्वे किम् आसीत् ?
4. मन्दिरस्य पुरतः धनिकाः किम् कुर्वन्ति स्म ?
5. कि सत्यमुक्तम् ?

5 अधुना तु गृहे – गृहे सङ्गणकं विद्यते | मार्गे – मार्गे सङ्गणकशिक्षणकेन्द्राणि विराजन्ते | किम् अधिककथनेन , प्राथमिक विद्यालयापेक्षया सङ्गणकशिक्षणकेन्द्राणि एव अधिकानि दृश्यन्ते | सङ्गणकयन्त्रेण विना अद्य वैज्ञानिकलोकः अन्धः एव | मनुष्येण कर्तुम् अशक्यानि अनेकानि कार्याणि अनेन सुखेन सम्पाद्यन्ते | कष्टसाध्यानि अपि गणनकर्माणि क्षणाभ्यन्तरे कर्तुं समर्थम् इदं यन्त्रम् | सङ्गणकस्य स्मरणशक्तिः अपि असाधारणी एव | असंख्यानां विषयानां संग्रहणं कृत्वा तान् अगणितकालपर्यन्तं स्वोदरे रक्षितुमपि समर्थं तत् यन्त्रम् | यदा वयं इच्छामः तदा तान्विषयान् तस्य स्मरणकोषम् उद्घाटय ततः स्वीकृत्य द्रष्टुं शक्नुमः | तत् तु अनलसं , निष्कृष्टम् अविरतं च कर्म करोति | इदानीं तादृशी स्थितिः आगता दृश्यते यत् यदि कश्चन सङ्गणकंप्रवर्तनं न जानाति तर्हि सः निरक्षरः अज्ञानी इति वा परिगण्यते आधुनिकैः जनैः |

- 1 केन विना वैज्ञानिकलोकः अन्धः एव ?
- 2 सङ्गणकस्य का असाधारणी ?
- 3 आधुनिकजनैः कः निरक्षरः अज्ञानी वा परिगण्यते ?
- 4 सङ्गणकं कथं कर्म करोति ?
- 5 संगणकस्य संग्रहण शक्ति कीदृशी ?

6 अहम् एकः छिन्नः द्वुमः अस्मि | ह्यः वने एकः नरः आगच्छत् | सः काष्ठाय मम शरीरम् अच्छिनत् | छेदनेन मे शरीरे अनेके व्रणाः जाताः | छुरिकायाः प्रहारेण शरीरात् अश्रुरूपाः जलबिन्दवः अपतन् | अकथनीया मम पीडा | हृदयं विदीर्ण जातम् | अश्रुमिः कण्ठः अवरुद्धः | मम अन्तकालः समीपे एव तिष्ठति | काष्ठानि एकत्रीकृत्य सः तु अगच्छत् | परं कोऽस्ति अत्र कथाव्यथा श्रवणाय ? वृक्षान् छित्त्वा नरः प्रकृतिमातुः अङ्गानि नाशयति इन्धनाय , कर्गदपत्राय , भवननिर्माणाय , मम काष्ठस्य प्रयोगः भवति | किन्तु कुतः मे पत्राणि , पुष्पाणि , कुतः च रोगनिवारणाय औषधयः ? निराश्रिताः भविष्यन्ति आश्रिताः खगाः कीटपतंगाश्च | पन्थानः

अपि छायाहीना: भविष्यन्ति । आतपेन तप्तः श्रान्तः पथिकः अधुना कुत्र गमिष्यति ? मम जीवने पुनः वसन्तर्तुः न आगमिष्यति ।

- 1 द्रुमस्य जीवने पुनः किम् न आगमिष्यति ?
- 2 नरः किमर्थं द्रुमस्य शरीरम् अच्छिनत् ?
- 3 छुरिकाप्रहारेण वृक्षस्य शरीरात् के अपतन् ? (
- 4 वृक्षान् छित्त्वा किं भवति ?
- 5 कौः कंठः अवरुद्धः?

7 भारते उत्सवाः द्विविधाः सन्ति – राष्ट्रीयाः उत्सवाः अन्ये च पारम्परिकाः उत्सवाः । 1947 तमे वर्षे अगस्तमासस्य पञ्चदशदिनाङ्के अस्माकं देशः स्वतन्त्रः जातः । अतः समग्ने देशे अयम् उत्सवः आयोज्यते । एवमेव 1950 तमे वर्षे जनवरीमासस्य षड्विंशतितिथी गणतन्त्र दिवस समारोहः भवति । एतौ अस्माकं राष्ट्रीयौ उत्सवौ ।

पारम्परिक – उत्सवेषु एकः विशिष्टः उत्सवः श्रावणपूर्णिमा वर्तते । एतत् दिनं भारतस्य केन्द्रशासनेन संस्कृतदिनत्वेन पोषितम् अस्ति । अतः समग्रे देशे संस्कृतज्ञाः संस्कृतोत्सवम् मानयन्ति । अस्मिन् दिने अस्माभिः संस्कृतकार्यक्रमेषु भागः ग्रहीतव्यः । विदुषां मेलनं, संस्कृत नाटकानां मञ्चनम्, परिचर्चा, श्लोकोच्चारणम्, संवादाः, प्रदर्शनी, इत्यादयः बहवः कार्यक्रमाः आयोजितुं शक्यन्ते । संस्कृतम् अस्माकं देशस्य गौरवम् इति अस्माभिः सर्वदा स्मरणीयम् । संस्कृतमेव अस्माकं संस्कृतिः आश्रिता । अतएव उच्यते भारतस्य प्रतिल़े है— संस्कृतं संस्कृतिश्च ।

1. गणतन्त्र दिवस समारोहः कदा समायोज्यते ?
2. किं दिन 'संस्कृतदिवसः' इति घोषितम् ?
3. अस्माकं देशस्य गौरवं किम् ?
4. उत्सवाः कति विधाः भवन्ति ?
5. संस्कृतदिवसे अस्माभिः किं करणीयम् ?

8 महाभारते व्यासः धर्मम् शाश्वतम् अकथयत् – अतः जनः लोभेन भयेन वा धर्मः न परित्याग्यः । महाभारतं वस्तुतः कौरवपाण्डवयोः युद्धस्य वर्णनमेव चित्रयति । प्रत्येक वीरस्य वीरगाथा अत्र कथारूपेण वर्णिता । भगवतः श्रीकृष्णस्य सारथित्वे अर्जुनः एकाकी एव अनेकान् जयति । युद्धे पात्रयोः संवादः यदा – कदा एकम् उपाख्यानं भवति । अस्य अंशः गीतानाम्ना अस्मिन् विश्वे प्रतिष्ठितः । दैव्यः आसुर्यः सम्पदः अपि सम्यक् कथिताः अत्र । महाभारतस्य सर्वाधिक प्रमुखं पात्रं भीष्मः अपि वर्तते ।

1. धर्मः कीदृशः कथयते ?

2. महाभारतस्य प्रणेता का ?
3. महाभारतस्य कः अंशः अस्मिन् विश्वे प्रतिष्ठितः ।
4. एकाकी अनेकान् जयति ?
5. का: सम्पदः अत्र कथिताः ?

9 संस्कृतभाषायाम् इदं प्रसिद्धम् अस्ति – अविवेकी पक्षपाती जायते । अस्य तात्पर्यमस्ति यत् अविवेकिनः जनाः स्वजनान् एव पोषयन्ति एवम् एव श्रीहर्षः स्वमहाकाव्ये लिखति – ‘ भवन्ति हि भव्येषु पक्षपातः । । वस्तुतः ये जनाः आत्मनां कृते भव्याः प्रियाः च भवन्ति तान् प्रति तु पक्षपातः संजायते एव । जनाः अस्याभिप्रायम् इमं गृहन्ति यत् स्वजातीयानां पारिवारिकाणाम् जनानां वा पक्षे स्वीकृते एव उदयः भवति भ्रष्टाचारस्य । अतः अतिप्राचीनकालाद् एव समाजे भ्रष्टाचारः प्रचलितः आसीत् । अभिज्ञानशाकुन्तलेऽपि वर्यं पश्यामः यद् राज्ञः श्यालः खलु आरक्षकाणां महाधिकारी आसीत् ।

1. कालिदास – विरचित – नाटकस्य नाम किम् ?
2. भ्रष्टाचारः कस्मात् कालात् प्रचलितः ?
3. अविवेकिनः कान् पोषयन्ति ?
4. आरक्षकाणां महाधिकारी कः आसीत् ?
5. अविवेकी पक्षपाती जायते ‘ – अस्य कः अभिप्रायः ?

10 एकदा कस्यचिद् धनिकस्य गृहे महात्मागान्धिः प्रवचनं करोति स्म । बहवः श्रोतारः उपस्थिताः आसन् । प्रायः प्रवचनस्य प्रारम्भे महात्मा गान्धि य दीपं निर्वाप्य प्रार्थनां करोति स्म । एकदा सः पार्श्वे स्थितं तं धनिकं दीपस्य निर्वापणार्थं सङ्केतम् अकरोत् । धनिकः तद् अवगम्य सेवकम् आहूतवान् । यावत् सेवकः आगच्छति , तावत् दीपः निर्वापितः अभवत् । स्वयं महात्मा गान्धिः तं दीपं निर्वापितवान् । प्रवचने महात्मा उपादिशत् – केचन जनाः शारीरिकर्माणि निकृष्टानि मन्यन्ते । एषः भावः निन्दनीयः , स्वकार्यं स्वयमेव करणीयम् । तस्मिन् एव क्षणे मृत्तिकायाः पुष्पपात्रम् अधः पतितम् । तत्क्षणमेव उत्थाय महात्मा खण्डान् उत्थापयितुं प्रयत्नशीलः जातः परन्तु तस्मादपि पूर्व धनिकः झटिति उत्थाय तत् कार्यम् अकरोत् । एवं सः महात्मा आत्मनः उदाहरणं प्रस्तुत्य शारीरिक श्रमस्य महत्त्वं दर्शितवान् । किं वयं स्वकार्यं स्वयमेव कुर्मः ?

- 1 प्रवचनं कः करोति स्म ?
- 2 केचन जनाः कानि निकृष्टकर्माणि मन्यन्ते ?
- 3 पुष्पपात्रस्य खण्डान् कः उत्थापितवान् ?
- 4 महात्मा गान्धिः प्रवचने कस्य महत्त्वं प्रदर्शितवान् ?
- 5 प्रवचनस्य प्रारम्भे महात्मागान्धिः किं करोति स्म ?

## प्रश्न 26 पत्र अथवाप्रार्थना—पत्र

- 1 भवतीदशम्या: कक्षायाः छात्रा मनीषाअस्ति | स्वविद्यालयस्य प्रधानाचार्याय दिनत्रयस्य रुग्णतावकाशार्थप्रार्थनापत्रं लिखतु ।
- 2 आत्मानंदशम्या: कक्षायाः छात्र विक्रमंत्वास्वविद्यालयस्य प्रधानाचार्याय पार्श्वास्थेविद्यालय आयोज्यमानासुक्रीडाप्रतियोगितासु धावनप्रतियोगितयांभागमगृहितुमप्रार्थनापत्रं लिखतु ।
- 3 भवानदशम्या: कक्षायाः छात्र महेंद्रअस्ति | तवपितुः स्थानांतरणबीकानेरतः जयपुरनगरजातः | स्वविद्यालयस्य प्रधानाचार्याय स्थानांतरणप्रमाणपत्र प्राप्तुंप्रार्थनापत्रं लिखतु ।
- 4 भवानराजकीय उच्चमाध्यमिक विद्यालय, करियासरस्य दशम्या: कक्षायाः छात्र राजारामअस्ति | स्वविद्यालयस्य प्रधानाचार्याय आवश्यक कार्यवशातपंचदिनस्य अवकाशार्थप्रार्थनापत्रं लिखतु ।
- 5 स्वं कवितामत्वाराजकीय उच्चमाध्यमिक विद्यालय, बीकनेरस्य प्रधानाचार्याय चरित्र—प्रमाण—पत्रंप्राप्तुंप्रार्थनापत्रं लिखतु ।
- 6 स्वपितरं प्रति लिखितम् अधः पत्रं मञ्जूषाप्रदत्तशब्दैः पूरयित्वा पुनः लिखित—  
गोदवरीछात्रावासात्

दिनाङ्कः ..... ।

माननीया: पितृवर्याः ।

सादरं .....

अत्र कुशलं तत्राप्यस्तु । मम .....समाप्ता । परिक्षापत्राणि अतिशोभनानि जातानि । परिक्षा परिणामश्च ....  
.....प्रथमसप्ताहे उद्घोषयिष्यते । अत्रान्तरे, अस्माकं विद्यालयस्य ..... अस्मान् शैक्षणिकभ्रमणाय  
मुम्बईतः नातिदूरे एकस्मिन् .....स्थिताम् एलोरा –गुहां प्रति ..... । अत्र प्राचिनानि शिवमन्दिराणि  
सन्ति । अहमपि तत्र गन्तुम् ..... । एतदर्थम् अस्माभिः ..... रुप्यकाणि दातव्यानि सन्ति । कृपया  
.....उपर्युक्तां राशिं संप्रेष्य माम् अनुगृहीतां कुर्वन्तु । गृहे सर्वेभ्यः मम ..... निवेदनीयः ।

भवतां प्रियपुत्रीः

मञ्जूषा —

प्रणामात्रजलि, अध्यापकाः, धनादेशद्वारा, पञ्चशतम्, द्वीपे, इच्छामि, नेष्यन्ति, प्रणमामि, आगामिमासस्य,  
अर्धवार्षिकपरिक्षा

- 7 भवतः नाम अजय अस्ति । विद्यालयस्य प्रतियोगितासु भवता अनेकानि पदकानि जितानि । अस्मिन्  
विषये दिल्लीनगरे निवसन्तं मित्रं माधवं प्रति लिखितम् पत्रम् मंजूषातः पदानि चित्वा रिक्षानानि पूरयता

तिथि:

प्रिय मित्र

2

3 नमस्ते ।

अत्र कुशलं नत्रास्तु । अहौं विद्यालयस्य प्रतियोगितासु अतिव्यस्तः आसम् । अतः विलम्बेन पत्रं लिखामि । क्षम्यताम् । त्वं जानासि एव यत् धावनखेलाः च महाचम् अतीव – 41 मया अनेकासु प्रतियोगितासु भागः –51 100.मी धानवप्रतियोगितायां मया रजतपदक 400 मी . प्रतियोगितायां च स्वर्णपदकं जितम् । 400 मी . धानवप्रतियोगितायां मया नवकीर्तिमान –6 । इदानीम् प्रतियोगिताः तु समाप्ताः । आगामि मासे एव —————— 7 भविष्यति । स्वाशिक्षकाणां 8 स्वपरिश्रमेण च अहं सर्वेषु विषयेषु प्रथमांकान् प्राप्त्यामि । तव पितृभ्यां –9 निवेद्यते ।

तव —————— 10

अजय

मंजूषा प्रणामाः , आग्रानगरात् , स्थापितम् , अर्धवार्षिक – परीक्षा , रोचन्ते , माधव , गृहीतः सस्नेह , मार्गदर्शनेन , अभिन्नमित्रम् ।

8 भवान् राजवीरः । भवतः विद्यालये वार्षिकोत्सवे संस्कृत नाटकस्य मञ्चनम् भविष्यति । तदर्थं स्व मित्रम् राजपालं प्रति लिखितं निमंत्रणपत्रं मञ्जूषापदसहायतया पूर्यित्वा पुनः उत्तरपुस्तिकायां लिखत ।

मञ्जूषा द्रष्टुम् , अग्रजेभ्यः , रूपनगरतः , कुशली , मञ्चनम् , राज्यपाल ! करिष्यामि , उत्साहवर्धनम् ।

किसान छात्रवासः

दिनांकः 10 12

20••

प्रिय मित्र.....

अत्र सर्वगतं कुशलम् अस्ति । मन्ये भवान् अपि..... इति अस्माकं विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवे , “रमणीया हि सृष्टिः एषा ” इति नाटकस्य ..... भविष्यति । अहं तस्मिन् नाटके काकस्य अभिनयं..... । भवान् अवश्यमेव तत् ..... आगच्छतु । मम अपि भविष्यति । सर्वभ्यः मम प्रणामाऽज्जलिः निवेद्यताम् । इति ।

भवतः मित्रम्

राजवीरः

9 त्वं स्वकीयं मित्रं प्रतिस्वपरीक्षासिद्धता विषये अधोलिखितपत्रमञ्जूषा सहायतया रिक्त स्थानानि पूरित्वा लिखत ।

( परिजनाः , विशेषकक्षां , सन्निकटे , कालः , प्राप्तुं निर्माय , अधीयानः सर्वदा सुनगरम् )  
प्रियमित्र ! कवीन्द्र !

कुशली सन् कुशलं कामये । मा . शि . बोर्डपरीक्षा	वर्तते । अहं
समयसारिणी योजनया अधीयानः अस्मि । अधुना मम	अपि मम सहयोगे रताः
सन्ति । गुरवः सर्वोत्तमान् अड्कान् विद्यालये	सञ्चालयन्ति ।
ममापि लक्ष्यं तदेव वर्तते । भवानापि यो जनया एव र्याद् । गतः	न
पुनरायाति , इति सूक्ति अपि स्मर ।	

भवन्मित्रम्

—नरेन्द्रः

10 भवान् रमेशः स्वकीयं पितरं प्रति स्वाध्यायविषये अधोलिखितपत्रं मञ्जूषापदसहायतया पूरित्वा लिखत

सम्यक् , अस्माकम् , भृशम् , विहाय , सादरम् , अन्यत् , न्यूनताम् मातरम्

जामनगरतः

दिनाङ्कः 18 मार्च 20ग्र

परमपूजनीयेषु पितृचरणेषु ( 1 )	प्रणतयः सन्तु । भवतां पत्रमधिगतम् । समाचारान् अधीत्य	
मे मनः ( 2 )	मोदतेतराम् । मईमासे ( 3 ) ..	परीक्षा सम्पत्स्यते ।
सम्प्रति अध्ययनकर्म ( 4 )	चलति । संस्कृतव्याकरणं ( 5 )	सर्वेषु विषयेषु
दक्षतामापन्नोऽस्मि । व्याकरणस्यापि ( 6 )	शीघ्रमेव अपनेष्यामि ( 7 )	प्रति मे सादरं
प्रणतयः । ( 8 ) .	कुशलम् ।	

भवत्कःसुतः

रमेशः

प्रश्न 27 मञ्जूषातः उपयुक्तपदानि गृहीत्वा संवादं पूरयतु

1 मञ्जूषातः उपयुक्तपदानि गृहीत्वा पुत्रस्य अध्ययनविषये पितापुत्रयोः संवादं पूरयतु  
(अध्यापकः विषये गणिते व्यवस्थां स्थानान्तरणम् अध्ययनं समीचीनं काठिन्यम् )

पिता:— रमेश ! तव..... कथं प्रचलति ?

रमेश :— हे पिता ! अध्ययनं तु .....प्रचलति ।

पिता:— कोऽपि विषयः एतादृशः अस्ति यस्मिन् त्वं..... अनुभवसि ?

रमेशः :— मम स्थितिः सम्यक् नास्ति । यतोहि अस्माकं विद्यालये इदानीं गणितस्य..... नास्ति ।

पिता:— त्वं पूर्वं तु माम् अस्मिन्न..... न उक्तवान् !

रमेशः :— पूर्वं तु अध्यापक — महोदयः आसीत् परं एकमासात् पूर्वमेव तस्य..... अभवत् ।

पिता :—अस्तु । अहं तव कृते गृहे एव गणिताध्यापकस्य..... करिष्यामि ।

रमेशः :— धन्यवादः । आम् ! अन्यत्र

2 मञ्जूषायां प्रदत्तपदैः ‘ जयपुरभ्रमणम् ’ इति विषये मित्रयोः परस्परं वार्तालापं पूरयतु । द्य  
मित्रैः जयपुरं कार्यक्रमः दर्शनीयम् भ्रमणार्थम् यात्रानुभवविषये द्रक्ष्यामः

विनोदः— अंकित ! श्वः भवान् कुत्र गमिष्यति ?

अंकित :— अहं.....गमिष्यामि ।

विनोदः— तत्र किमपि कार्यं वर्तते ? अथवा..... एव गच्छति ?

अंकितः— कार्यं नास्ति , अहं तु ..... सह भ्रमणार्थं गच्छामि ।

विनोदः— जयपुरे कुत्र — कुत्र भ्रमणस्य.....अस्ति ?

अंकित : वयं तत्र आमेर — दुर्ग , जयगढ़दुर्ग , गोविन्ददेव — मन्दिरं च.....

विनोदः तत्र नाहरगढ़ — दुर्गमपि पश्यतु । तदपि..... अस्ति ।

अंकित! यदि समयः अवशिष्टः भविष्यति तर्हि निश्चयेन तत्र गमिष्यामः ।

विनोदः— बाढ़म् । मित्र ! नमस्ते ! इदानीम् अहं गच्छामि । सोमवासरे आवां पुनः मेलिष्यावः । तदा.....  
वार्तालापं करिष्यावः ।

3 मञ्जूषायाः उपयुक्तपदानि गृहीत्वा गुरुशिष्ययोः मध्ये क्रीडायाः विषये संवादं पूरयत ।

अध्ययनम् क्रीडने बहुलाभम् आवश्यकता अधुना करोषि क्रीडाङ्गणे क्रीडायै

अध्यापकः— प्रवीण ! त्वम् अत्र किं .....?

प्रवीणः— मम हे गुरो ! अहम्..... किमपि न करोमि ।

अध्यापकः— तर्हि गच्छ । तव मित्राणि तत्र .....क्रीडन्ति , तैः सह क्रीड ।

प्रवीण : — मम .....रुचिः नास्ति । अतः अहं न क्रीडामि ।

अध्यापक :— स्वस्थशरीरस्य स्वस्थमनसः च कृते क्रीडायाः अस्माकं जीवने महती..... अस्ति ।

प्रवीणः— यदि अहं क्रीडायां ध्यानं दास्यामि तर्हि मम..... बाधितं भविष्यति ।

अध्यापक :— एतद् समीचीनं नास्ति । क्रीडायै स्वल्पसमयम् एव प्रयच्छ । अल्पसमयः अपि शरीराय..... प्रदास्यति ।

प्रवीणः— बाढ़म् श्रीमन् ! इतः आरभ्य अहं किञ्चित् समयं.....अपि दास्यामि ।

4 मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया मातापुत्रयोः मध्ये वार्तालापं पूरयतु ।

वस्तूनि आपणं सायंकाले विद्यालयस्य मातुलः भोजनं त्वं

माता —राघव ! किं करोषि ?

राघवः— अहं मम ..... गृहकार्यं करोमि ।

माता — पुत्र ! गृहकार्यानन्तरम्.....गत्वा ततः दुर्घं शाकफलानि च आनय ।

राघवः— शीघ्र किमर्थम् ?

माता — अद्य तव..... आगमिष्यति , अतः..... समयात् पूर्वमेव पक्ष्यामि ।

राघवः— मातुलः आगमिष्यति चेत् अहम् इदानीम् एव गत्वा .....क्रीत्वा आगच्छामि ।

5 मञ्जूषातः उचितानि पदानि चित्वा अधोलिखितं ' शिक्षक — छात्राः तयोमध्ये संवाद ' पूरयत  
(वयम् , वाद्ययन्त्राणि , शोभनम् , परन्तु , गातुम् , महोदये , इच्छन्ति , गायामः )

शिक्षकः — छात्रा :! किं भवन्तः किञ्चित् प्रष्टुम् ( 1 ).....

छात्राः— महोदये ! ( 2 )..... तु गातुम् इच्छाम ।

शिक्षकः — गातुम् इच्छन्ति ( 3 ).....अहं तु ( 4 )..... समर्था । छात्राः( 5 )..... वयं गास्यामः ।

शिक्षकः— ( 6 ..... ) अहम् अपि गास्यामि । ( 7 )..... छात्राः यदि सन्ति , शोभनम् । वयं । शिक्षकः— एवम् तदा ( 8 ).....

6 मऋजूषायाः उपयुक्तपदानि गृहीत्वा पितापुत्रयोः मध्ये योगदिवसविषये संवादं पूरयतु ।  
( कुर्वन्ति , आगच्छ , जूनमासस्य , कार्यक्रमः , शक्नोमि , अस्माकम् , योगदिवसे , अन्ताष्ट्रियदिवसः)

पुत्रः —भोः पितः ! —————— 29 दिनांके कः दिवसः भवति ?

पिता — अरे ! तस्मिन् दिने तु…… भवति ।

पुत्रः —योगदिवसे के———— भवन्ति ?

पिता———— विश्वेजनाः प्रणायामं व्यायामं च कुर्वन्ति ।

पुत्र — योगेन———— स्वास्थ्यं सम्यक् भवति वा ?

पिता — आम् । ये योग———— ते रुग्णाः न भवन्ति ।

पुत्र — तर्हि अहम् अपि योगं कर्तुं ————— वा ?

पिता—किमर्थं न———— आवां योगं करवाव ।

7 मऋजूषायाः उपयुक्तपदानि गृहीत्वा चिकित्सालय — दर्शनम् ' इति विषये संवादं पूरयत  
(तत् , त्वम् , पीडितः , कुत्र , उपचारम् , के , अस्ति , चिकित्सालयभवनम्)

पुनीतः — सुरेश ! त्व———— गच्छसि ?

सुरेशः —पुनीत !———— अपि आगच्छ ?

पुनीतः — अरे !———— किं भवनम् अस्ति ?

सुरेशः — तत्———— अस्ति । आवाम् अपि मातुलं द्रष्टुं चलावः ।

पुनीतः —सः केन रोगेण———— अस्ति ?

सुरेशः सः उच्चरक्तचापेन पीडितः ..... ?

पुनीतः —ते श्वेतप्रावारकधारकाः———— सन्ति ? ते किं कुर्वन्ति ?

सुरेशः — ते चिकित्सकाः सन्ति । ते कुर्वन्ति..... ।

8 मञ्जूषायाः उचितपदैः “ वसतिस्वच्छता ” इतिविषये संवादं पूरयत ।

( नालीनां , सुन्दरं , स्वच्छता , कदा , श्वः , वामतः , आरभ्य , त्वं )

महेशः— निरञ्जन ! ( 1 )———— रविवासरः , तव का योजना वर्तते ?

निरञ्जन : — अरे ( 2 )———— न जानासि ? रविवासरे सर्वे मिलित्वा वसतेः स्वच्छता करणीयास्ति ।

महेशः— अहो ! उत्तमः विचारः | सर्वे श्वः ( 3 )———— गम्यते ?

निरञ्जनः— प्रातः अष्टवादनाद् ( 4 )———— कार्यमिदं भविष्यति ।

महेशः— पूर्वं कस्य भागस्य ( 5 )———— करिष्यते ?

निरञ्जनः— ( 6 )———— विद्यामानस्य अद्यस्य उद्यानस्य आदौ करिष्यामः ।

महेशः— तेन तद् रमणीयं ( 7 )———— च भविष्यति ।

निरञ्जनः— ( 8 )———— स्वच्छता योजनायां स्वीकृता एव । :

09 मञ्जूषातः उचितानि पदानि चित्वा अधोलिखितं संवादं पूरयत ।

अवश्यमेव, आचारः, पाठशालाम्, एका, पञ्चदशा, रन्नेहशीलः, तव, अध्येतुम्, पाठशालायाम्, गच्छसि ।

कृष्णः— त्वं कुत्र ( 1 )———— ?

राधा — अहम् ( 2 )———— गच्छामि ।

कृष्णः— ( 3 )———— पाठशालायां कति शिक्षकाः ?

राधा — मम पाठशालायाम् ( 4 )———— शिक्षकाः ।

कृष्णः— तव ( 5 )———— शिक्षिका न अस्ति ?

राधा — ( 6 )———— शिक्षिका अस्ति ।

कृष्णः— शिक्षकाणां ( 7 )———— कीदृशः अस्ति ?

राधा — ( 8 )———— ।

10 मञ्जूषातः उचितानि पदानि चित्वा अधोलिखितं ‘नागरिकनाविकयोः संवादं पूरयत ।

तारकाणि, नौका, नक्षत्र—विद्याम्, त्रिचतुर्थाशः, चतुर्थाशः, गणना, जीवनस्य, उदरं, सम्पूर्णमेव, तरणम् ।

नागरिकः —भोः नाविक ! (1) —————— जानासि ?

नाविकः —नहि नहि अहं तु प्रतिदिनं (2) —————— दृष्ट्वा नमामि ।

नागरिकः— (हसन्) भो मूर्ख ! तव जीवनस्य (3) —————— नष्टः । गणितं पठितवान् किम् ?

नाविकः — (4) —————— जानामि न तु गणितम् ।

नागरिकः — अरे तव (5) —————— अर्धं व्यर्थः गतः । वृक्षविज्ञानं जानासि ?

नाविकः — न जानामि । कथमपि (6) —————— चालयामि (7) —————— च पालयामि ।

नागरिकः — हा हन्त ! तव जीवनस्य (8) —————— व्यर्थः गतः ।

नाविकः —श्रीमान् वायु प्रकोपः उत्पन्नः । अहं तु कुर्दित्वा तरामि । किं त्वं तरणं जानासि ?

#### प्रश्न28 संस्कृत भाषायामनुवाद :

1. महिला तालाब से जल लाती है
2. तुम भी जाओ
3. दस बज गए है
4. मैं गणित तथा विज्ञान पढ़ता हूँ
5. मित्र को दूध अच्छा लगता है
6. मैं ज्ञानी हूँ
7. माता पुत्र को उपदेश देती है
8. मुझे फल अच्छे लगते है
9. तीन बालिकाएं इधर देखती हैं
- 10.कक्षा के बाहर शिक्षक है
- 11.उसके बिना तुम नहीं जाते हो
- 12.उन सभी के साथ सुनीता आई
- 13.विद्या विनम्रता प्रदान करती है
- 14.बोलने में कंजूसी कैसी
- 15.जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से महान है ।
- 16.कृष्ण के चारों ओर बालक हैं
- 17.व्ह आँख से काना है
18. हम सभी नाटक कहते हैं
- 19.राजेश महेश का मित्र है
- 20.बालक को मोदकप्रिय है
- 21.हिमालय सभी पर्वतों से ऊँचाहै
- 22.शीला मोहन के साथ विद्यालय जाती है

- 23.गुरु शिष्य पर क्रोध करता है
- 24.मोहन राम से सुन्दर है
- 25.वह हमेशा सत्य बोलता है
- 26.मेरे पिता कृषक है
- 27.वह माता के साथ जाती है
- 28.वह चित्र देखता है
- 29.राम पैर से लंगड़ा है
- 30.वह मेरा भाई है।
- 31.गंगा हिमालय से निकलती है ।
- 32.रमेश और सुरेश खेल रहे थे
- 33.बालिका पानी लाती थी
- 34.राजा वस्त्र देता है
- 35.तुम क्यों हंस रहे थे ?
- 36.तुमने क्या खाया ?
- 37.मोहन पत्र लिखेगा
- 38.सीता वन को जाएगी
- 39.गंगा और यमुना के मध्य प्रयाग है
- 40.बालक दूध के लिए रोता है
- 41.गंगा नदियों में पवित्र है
- 42.वह पढ़ने के लिए यहाँ आता है
- 43.यह कार्य करने योग्य है
- 44.मेरी कक्षा में 65 छात्र हैं
- 45.बालक मेरे साथ खेलेगा
- 46.वृद्ध सिर से गंजा है
- 47.मालाकार लता से पुष्प चुनता है
- 48.राजा शत्रु से राज्य जीतता है
- 49.गुरु से निवेदन करता है
- 50.भवन के ऊपर पक्षी है
- 51.गाँव के चारोंओर खेत है
- 52.राजमार्ग के दोनों ओर वृक्ष है
- 53.माता पुत्र को उपदेश देती है
- 54.मुझे फल अच्छे लगते हैं
- 55.सोहन घोड़े से गिरपड़ा ।
- 56.किशोरस्वाभाव से परिश्रमी है।
- 57.तुम्हारा भाई क्या कहता है?
- 58.बालिका को दौड़ना नहीं चाहिए ।

59.तुम दोनों भोजन खाओगे ।

60.सीता ने पत्र लिखा ।

